सौमनस्यसूक्त

[ऋग्वेद के 10वें मण्डल का यह 191 वाँ सूक्त ऋग्वेदका अन्तिम सूक्त है। इस सूक्त के ऋषि आङ्गिरस, पहले मन्त्र के देवता अग्नि तथा शेष तीनों मन्त्रों के संज्ञान देवता हैं। पहले, दूसरे तथा चौथे मन्त्रों का छन्द अनुष्टुप् तथा तीसरे मन्त्रका छन्द त्रिष्टुप् है। प्रस्तुत सूक्त में सबकी अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले अग्निदेव की प्रार्थना आपसी मतभेदों को भुलाकर सुसंगठित होने के लिये की गयी है। संज्ञान का तात्पर्य समानता तथा मानसिक और बौद्धिक एकता है। समभाव की प्रेरणा देनेवाले इस सूक्त में सबकी गति, विचार और मन-बुद्धि में सामञ्जस्य की प्रेरणा दी गयी है। यहाँ सूक्त अनुवाद सहित प्रस्तुत है-]

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥ 1॥
सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥ 2॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ 3॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ 4॥
[ऋग्वेद 10/ 191]

अनुवाद

समस्त सुखों को प्रदान करने वाले हे अग्नि ! आप सबमें व्यापक अन्तर्यामी ईश्वर हैं। आप यज्ञवेदी पर प्रदीप्त किये जाते हैं। हमें विविध प्रकार के ऐश्वर्यों को प्रदान करें ॥1॥

[हे धर्मनिरत विद्वानो!] आप परस्पर एक होकर रहें, परस्पर मिलकर प्रेम से वार्तालाप करें। समान मन होकर ज्ञान प्राप्त करें। जिस प्रकार श्रेष्ठजन एकमत होकर ज्ञानार्जन करते हुए ईश्वर की उपासना करते हैं, उसी प्रकार आप भी एक मत होकर-विरोध त्याग करके अपना काम करें ॥2 ॥

हम सबकी प्रार्थना एक समान हो, भेद-भाव से रहित परस्पर मिलकर रहें, अन्तःकरण-मन-चित्त-विचार समान हों। मैं सबके हित के लिये समान मन्त्रों को अभिमन्त्रित करके हवि प्रदान करता हूँ ॥3॥

तुम सबके संकल्प एक समान हों, तुम्हारे हृदय एकसमान हों और मन एक समान हों, जिससे तुम्हारा कार्य परस्पर पूर्णरूप से संगठित हो ॥4॥

कार्यकारिणी 2024-29

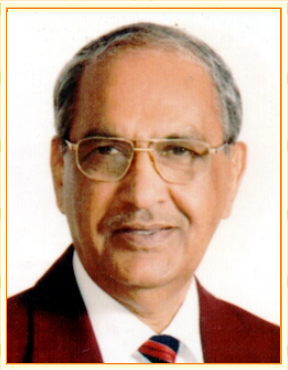

रविनन्दन सिंह
अध्यक्ष

गीतेन्द्र प्रताप सिंह
उपाध्यक्ष

ब्रिगेडियर शिवपाल सिंह
उपाध्यक्ष

बी.एस.एस. परिहार
सचिव

एच.पी. पटेल
कोषाध्यक्ष

डॉ. प्रदीप कुमार सोलंकी
संयुक्त सचिव

एड. हरीश अग्निहोत्री
सहकोषाध्यक्ष

आर.बी. सिंह
सदस्य

डॉ. दिनकर शर्मा
सदस्य

डॉ. के.पी. सिंह
सदस्य

आर.एन. गुप्ता
सदस्य

डॉ. पुष्पराज सिंह बघेल
सदस्य

मृगेन्द्र सिंह परिहार
सदस्य

विन्ध्यिका 2025

मुख पृष्ठ परिचय

भारत के मेरुदण्ड विन्ध्याचल के दो सपूत, राष्ट्र रक्षा को कर्मभूमि बनाने वाले वर्तमान में हमारी सेना के मूर्धन्य पदों पर विराजमान **जनरल उपेन्द्र द्विवेदी** थल सेना अध्यक्ष एवं **एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी** नौसेना अध्यक्ष हैं। यह दुर्लभ संयोग है कि सेना के दो शीर्ष पदों पर एक ही क्षेत्र के निवासी एवं एक ही शिक्षा संस्थान 'सैनिक स्कूल रीवा' के छात्र एवं सहपाठी रहे, तथा एक ही समय काल में प्रोन्नत हुए। विन्ध्य सांस्कृतिक मंच की ओर से विन्ध्य धरा के वीर सपूतों को शत्-शत् नमन् के साथ आदरांजलि स्वरूप विन्ध्यिका के मुख पृष्ठ पर छायाचित्र साभार प्रस्तुत है।

''**विन्ध्यिका 2025**'' के लिये उक्त विभूतियों के चित्र एवं परिचय उपलब्ध कराने हेतु संस्था ब्रिगेडियर शिवपाल सिंह की आभारी है।

अध्यक्ष
रविनन्दन सिंह

उपाध्यक्ष-1
गीतेन्द्र प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष-2
ब्रिगेडियर एस.पी. सिंह

सचिव
बी.एस.एस. परिहार

कोषाध्यक्ष
एच.पी. पटेल

सहकोषाध्यक्ष
हरीश अग्निहोत्री

संयुक्त सचिव
डॉ. पी.के. सोलंकी

सदस्य
डॉ. दिनकर शर्मा
डॉ. के.पी. सिंह
आर.बी. सिंह
आर.एन. गुप्ता
मृगेन्द्र सिंह परिहार
डॉ. पुष्पराज सिंह बघेल

विशिष्ट आमंत्रित सदस्य
ए.पी. शुक्ला
प्रो. एस.पी. गौतम
डॉ. एच.एन. मिश्रा
जी.एस. बघेल
ज्ञानेन्द्र सिंह

प्रकाशक
श्री विन्ध्य सांस्कृतिक मंच
विन्ध्य भवन, कटंगा, जबलपुर

मुद्रण एवं ग्राफिक्स
नीरज ऑफसेट, जबलपुर
मोबा. 9425151400

संपादकीय निवेदन

गीतेन्द्र प्रताप सिंह भरतशरण सिंह परिहार

एक बार पुन: विन्ध्यिका 2025 के अंक के साथ हम आपके समक्ष उपस्थित है। हमारी सदैव इच्छा रहती आयी कि नियमित रूप से विन्ध्यिका का प्रकाशन हो, तथापि अपरिहार्य कारणों से यदा-कदा विलम्बा होता रहा।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हम सभी यह जानते है कि लोगों में पढ़ने-पढ़ाने की रूचि कम हो रही है। नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली अनेक पत्र-पत्रिकायें अब विलुप्त होती जा रही है, ऐसे में पत्रिका का प्रकाशन हमारा साहस भरा कदम कहा जावेगा। निरंतरता में न सही हम यह प्रयास करते ही रहे। सीमित क्षेत्र में हमारे इस प्रयास को सराहना भी मिलती रही है और प्रतीक्षा भी रहती आयी। यह सब इसलिये संभव हो पाता है क्योंकि विन्ध्यिका के रचनाकारों एवं सुधी पाठको के आत्मीय सूत्र में हम बंधे हैं।

'**विन्ध्यिका**' में हमारा प्रयास विन्ध्य क्षेत्र के स्थापित, तथा साथ ही नवोदित रचनाकारों को सामने लाने का होता है। उनके माध्यम से विन्ध्य के समकालीन सृजन के साथ विन्ध्य की कला, सांस्कृति और पुरातत्व को सामने लाने का हमारा संकल्प होता है। हमारा यह भी प्रयास होता है कि विन्ध्य के लोकजीवन, लोकभाषा तथा लोकभोजन जिनके बारे मे में जानकारी विलुप्त होती जा रही है, अपने सुधी पाठको को परिचित करायें।

विन्ध्य क्षेत्र के कुछ मूर्धन्य रचनाकारों का देवलोक गमन हो गया हैं। प्रथम - श्री देवीशरण गामीण जी, जो विन्ध्य में प्रगतिशील आंदोलन की प्रथम पंक्ति के ध्वजवाहकों में रहे है। दूसरी विभूति रहे हैं सतना के अप्रतिम गीतकार डॉ. सुमेर सिंह शैलेश जिन्हें साहित्य जगत में 'गीतर्षि' के नाम से जाना जाता था। वे न केवल विन्ध्य क्षेत्र के लोकप्रिय कवि थे वरन् सारे देश मे उनकी प्रसिद्धि मंच के रससिद्ध कवि के रूप में थी। तीसरे विभूति रीवा जिले के हरदी गांव में जन्मे श्री कलिका त्रिपाठी, राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी थे। उनका सृजन संसार हिंदी के साथ-साथ बघेली में भी उतना भी व्यापक था। गीतों-गजलों के अतिरिक्त श्री कालिका जी बहुत अच्छे कहानीकार भी थे। यह रचनाकार अब हमारे मध्य नही है। उन्हें श्रद्धांजिल स्वरूप उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में परिचित कराने हम इस अंक में विशेष सामग्री दे रहे हैं। विन्ध्य परिवार की ओर से हम विन्ध्य क्षेत्र के मूर्धन्य रचनाकारों को नमन करते हुये अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते है।

गत वर्ष 2024 में विन्ध्य क्षेत्र को एक और सम्मान प्राप्त हुआ, जिसके लिये हम सब विन्ध्यवासी गौरवान्वित अनुभव करते है। विन्ध्य की माटी के दो सपूतों को थलसेना एवं नौसेना के सर्वोच्च पद पर अलंकृत किया गया। रीवा जिले की नई गढ़ी तहसील (अब नवीन घोषित जिले मऊगंज के अंतर्गत) के गांव मुढ़िला में जन्में श्री उपेन्द्र द्विवेदी को भारतीय थलसेना का अध्यक्ष एवं सतना जिले की अमरपाटन तहसील में जन्में श्री दिनेश कुमार त्रिपाठी को नौसेना का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। एक साथ एक ही समयकाल में उनकी सफलता सभी विंध्य वासियों के लिये सम्मान का विषय है। विन्ध्यिका के इस अंक में विन्ध्य के इन सपूतों के व्यक्तिव एवं कृतित्व से संबंधित सामग्री संयोजित करने का प्रयास किया है एवं विन्ध्यिका के मुख्य पृष्ठ पर इनके चित्रों के माध्यम से हम इन्हें आदरांजलि देते है।

विन्ध्यिका में सदैव हमारा प्रयास पुरातन को प्रकाश में लाने एवं नवीन को समुचित स्थान प्रदाय करने का रहता आया है। हमारे इस प्रयास को विंध्य के स्थापित रचनाकारों के साथ नवोदित रचनाकारों का अहैतुक/स्नेह प्राप्त होता रहा है। उनके स्नेह एवं सहयोग के बल पर ही हम विन्ध्यिका का प्रकाशन कर पाने में समर्थ होते हैं। हम उन सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करते है। रचनाओं के संकलन में हमारे साथी श्री दिनेश प्रताप सिंह के लिये भी उनका आभार प्रकट करते है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दिये गये तथ्य लेखकों के अपने हैं, इस संबन्ध में पत्रिका किसी प्रकार उत्तरदायित्व नहीं लेती है। विन्ध्यिका को और अधिक उत्कृष्ट बनाने के लिये सभी लेखक बंधुओं एवं पाठको से सहयोग एवं परामर्श की कामना के साथ।

गीतेन्द्र प्रताप सिंह
भरतशरण सिंह परिहार

अपनी बात

स्नेही स्वजन,

इस वैज्ञानिक युग में परिस्थियाँ बहुत तेजी के साथ बदल रही हैं। जो तकनीक आज नई है कल पुरानी हो जाती है। तकनीक की तरह जीवन भी सदैव गतिमान है, पर जीवन में तकनीक की तरह शीघ्रता से बदलाव नहीं हो सकता और यह वांछनीय भी नहीं है, क्योंकि जीवन में ऐसा कुछ है जो सदैव सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक है और वह है संवेदना, परम्परा और संस्कार। जीवन की आपाधापी में, भौतिक सुखों की स्पर्धा में, सतत् आगे बढ़ते रहने के तनाव में हम इनके लिए अवसर ही नहीं निकाल पाते हैं। आधुनिकीकरण के इस युग में हम अपने संस्कारों को भूलते जा रहे हैं एवं हमारी नई पीढ़ी इनसे दूर होती जा रही है।

परंपराऐ, रीति रिवाज और संस्कृति ही मानव जाति की पहचान है इनके बिना मानव जीवन पशु तुल्य है। इस बदलते परिवेश में आज प्रमुख आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी संस्कृति एवं परम्पराओं को जीवित रखें और संवेदनाओं को कुन्द न होने दें। तभी जीवन की सरसता बनी रह सकेगी एवं जीवन में आनंद के स्त्रोत खोजे जा सकेंगे अन्यथा जीवन अजीविका की मशीन बन जाएगा।

विन्ध्य सांस्कृतिक मंच अपने सीमित साधनों से इस दिशा में प्रयासरत है। हमारी परिकल्पना है – अतीत की विरासत के सम्मान एवं संवर्धन के साथ ऐसा स्थिर आधार तैयार करना जो परम्परा को समृद्ध बना सके एवं सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रख सके। इसके लिए वरिष्ठों, यशस्वी प्रतिभाओं एवं नागरिकों का सम्मान, प्रतिभाओं के सम्मान के प्रोत्साहन के साथ समुदाय को आजीविका के सम्मानपूर्ण अवसरों को उपलब्ध कराने की दिशा में प्रयास के लिए कृत संकल्प है। विन्ध्य की रचनात्मक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने की दृष्टि से मंच द्वारा अपनी एक पत्रिका विन्ध्यिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था जो अन्तरालों एवं व्यवधानों के उपरांत भी अनियतकालिक अंतराल से ही सही, होता आया। संस्था की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही संस्था का भवन। यह दुष्कर कार्य पत्रिका के लिए प्राप्त विज्ञापनों की बचत राशि एवं सदस्यों व एवं अन्य सुधीजनों के सहयोग से सम्भव हो सका।

पिछले दो दशको से अधिक समय से मंच समय-समय पर विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करता रहा है, जिसके अंतर्गत भागवत कथा, संत समागम, विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिनिधियों का सम्मान, बघेली एवं बुन्देली लोक गीतो एंव लोक नृत्यों की मंचीय प्रस्तुति, बघेली व हिन्दी कवि सम्मेलन और पत्रिका विन्ध्यिका का प्रकाशन सम्मिलित रहा है।

ग्रेगेरियन/अंग्रेजी नए वर्ष का प्रारंभ हम विनम्रतापूर्वक बड़े आयोजनों से करने का प्रयास कर रहे हैं। 19 जनवरी 2025 को जबलपुर से लगे ग्रामीण अंचल के ग्राम बारहा में विशाल स्वास्थ्य शिविर (मेगा हेल्थ कैम्प) जिसमें हृदय, मस्तिष्क, सामान्य स्वास्थ्य एवं नेत्र चिकित्सा जैसी विधाओं के विशेषज्ञ चिकित्सक बाहर से आकर सेवा देंगे। इसके अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक सेवाओं की आयोजना है, जिनमें रक्तदान शिविर एवं रक्त दाताओं का डाटाबेस तैयार करना, आयुष्मान कार्ड निर्माण एवं वितरण, कृषि समस्या, विधिक समस्या, पशु चिकित्सा, बैंकिंग के परामर्श के लिए भी विशेज्ञ उपलब्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त ग्रामीणों से संवाद एवं भोजन का कार्यक्रम है।

इस प्रकार आयोजनों की श्रंखला का प्रारंभ इस विश्वास से आयोजित है कि इस प्रकार के कार्यक्रम आगे आने वाले समय में होते रहेंगे। हमारी आशाएं मंच के युवा सदस्यों पर टिकी हुई हैं। मैं उनका आव्हान करता हूँ कि नए वर्ष का प्रारंभ जिस प्रकार के विशाल कार्यक्रम से प्रारंभ हो रहा है, उन्हें निरंतर रखने को स्वप्रेरणा से आगे बढ़कर उत्तरदायित्व उठाएँ और संस्था को नई ऊचाईयों पर ले जाये। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह 'अपनी बात' उन्हें ऐसा करने की प्रेरणा दे। मुझे विश्वास है हम सब मिलकर हमारी संस्था को नई ऊचाईयों तक ले जाने में सफल होंगे।

रविनंदन सिंह

Mrs. SUNITA DWIVEDI
PRESIDENT AWWA

Mrs. Sunita Dwivedi, President AWWA is a science graduate and a homemaker. She is a keen proponent of yoga and spiritualism.

She was Chairperson, Veer Nari Committee Central AWWA during 2019-20. She actively reached out to the Veer Naris through proactive approach and has strived for a dignified life for our Veer Naris, Widows & their NOKs.

She holds immense compassion and concern for the differently abled and has been associated with an NGO ARUSHI, home for differently abled children, for last fourteen years. She has been actively involved in upliftment and upgradation of ASHA Schools including concept of ASHA MILAP. While at Seychelles for two years she was associated with an NGO providing care and comfort to the needy. She also taught Yoga & Hindi language to the local community.

She has extensive experience in the way of life of the people of Jammu & Kashmir, Ladakh and North-East wherein, she worked for the welfare of families of Army and Assam Rifles in remote areas. She has laid special emphasis to empower families through skill development initiatives. She is a firm believer of meaningful welfare of soldier's families by leveraging technological advancements to enhance quality of life and opportunities for growth.

Gen. & Mrs. Dwivedi are blessed with two daughters. Elder daughter, Ms. Shalini holds Masters from University of Pennsylvania, USA and presently is the global director at an international not-for-profit organisation aimed at providing economic mobility for all. She is happily married to Mr. Sunny Sreenivasan, an alumnus of INSEAD France. Sunny is currently global director at an international foundation focused on accelerating job growth and achievement. The younger daughter Ms. Shivangi is a graduate from Delhi University and is associated with a forum actively working for women's rights.

GENERAL UPENDRA DWIVEDI
PVSM, AVSM, CHIEF OF THE ARMY STAFF

General Upendra Dwivedi assumed command of the Indian Army on 30 Jun 24. Prior to this, he was Vice Chief of the Army Staff from Feb 24 onwards. He is the recipient of Param Vishisht Seva Medal, Ati Vishisht Seva Medal and three GOC-in-C Commendation cards.

He hails from Madhya Pradesh and has studied in Sainik School Rewa (MP). He joined the prestigious National Defence Academy in January 1981 and was commissioned into the 18th Battalion of the Jammu and Kashmir Rifles on 15 Dec 1984, which he later commanded in the Kashmir valley and the deserts of Rajasthan. From his school days, he was an outstanding sportsman and excelled in both NDA and IMA, where he was awarded the Blue in Physical Training. He continued to excel post commissioning and was awarded the gold medal in the Physical Training Course.

General officer has a unique distinction of balanced exposure along Northern, Western and Eastern Theatres, in varied terrain and operational environment including Deserts, High Altitude, Riverine, Built Up area, North East and Jammu and Kashmir. He commanded his battalion in active Counter Terrorist operations in Kashmir Valley and in Rajasthan Deserts. He has been IGAR (GOC) and Sector Cdr Assam Rifles in intense CT Ops and held various other Staff & Command appointments in the North East where he pioneered the first ever compendium on Indo - Myanmar Border Management.

Subsequently he commanded Rising Star Corps along Western front and prestigious Northern Army from 2022-2024 in extremely challenging operational environment. During his command, he provided Strategic guidance & Operational oversight for planning and execution of sustained operations along the Northern & Western borders, besides orchestrating the dynamic counter Terrorism operations in J&K. He was also involved in modernising and equipping of the largest Command of the Indian Army, where he steered the induction of Indigenous equipment as part of Atmanirbhar Bharat. He synergised with people of Jammu, Kashmir and Ladakh for convergent Nation Building outcomes and infrastructure development.

He has varied staff exposures which includes handling conventional operations of Armoured Brigade in the Punjab plains, providing logistical support to a Mountain Division in North East along the Northern Borders and operations of a Strike Corps in Deserts. At IHQ HQ (Army), he contributed significantly in Military Secretary's branch and was instrumental in raising of a section in Military Operations Directorate. Later, as the DG Infantry he steered and fast-tracked Capital procurement cases of weapons for all the three services, leading to significant and visible capability enhancement for our Armed Forces. As Deputy Chief, he gave impetus towards automation and absorption of niche tech in the Indian Army. Being a tech enthusiast, he worked towards enhancing the tech threshold of all ranks in Northern Command and pushed for Critical & Emerging Techs like Big Data Analytics, AI, Quantum and Blockchain based solutions.

The officer's two overseas tenures include Somalia, as part of HQ UNOSOM II and Seychelles as Military Advisor to the Government of Seychelles. Besides, attending Staff College, Wellington & Higher Command Course at AWC, Mhow, the officer was conferred 'Distinguished Fellow' in the coveted NDC equivalent course at USAWC, Carlisle, USA. Complementing his illustrious military career, are an M Phil in Defence & Management Studies, in addition to the two Master's Degree in Strategic Studies and Military Science including one from USAWC, USA. He has authored / presented articles in various professional forums / Journals.

He is married to Mrs Sunita Dwivedi, a science graduate, who is a home maker. Mrs Sunita Dwivedi has been associated with Aarushi, an institute for special ability children at Bhopal. The couple are blessed with two daughters who are working with NGOs. General officer is a skilled Yoga practitioner.

Mrs. SHASHI TRIPATHI
PRESIDENT NWWA

Education :

- BSC FROM DEVI AHILYA UNIVERSITY, INDORE,
- MA (HISTORY) FROM DEVI AHILYA UNIVERSITY, INDORE
- PG DIPLOMA IN FASHION DESIGNING
- DIPLOMA IN TEXTILE DESIGNING
- FELLOWSHIP, ARTIST (PAINTING) AT TRIVENI KALA SANGAM, NEW DELHI

Work Experience : 1996-2012

Senior Faculty & HOD in IITC, BD Somani (Mumbai), NIFD(Vizag), WLC(New Delhi) Worked as Fashion Show Coordinator, Illustrator Designer, Visual Merchandiser & Stylist.

2012 Onwards.

Working artist (painting) at the Triveni Kala Sangam, New Delhi under the guidance of Mr. Rameshwar Broota & Mr. Sanjay Roy.

Mrs. Shashi Tripathi took over as President of Navy Welfare and Wellness Association (NWWA) on 29 April 2024. An accomplished artist and fashion designer with a science background, she embraced her passion for art after marriage, starting her journey with a diploma in fashion design from Triveni Kala Sangam, Delhi. Her artwork reflects contemporary themes blended with traditional influences and life experiences, using diverse mediums and techniques to explore nature, travel, and human emotions.

Mrs. Tripathi's career also includes significant social work, particularly her engagement with rural artisans in Andhra Pradesh, which deepened her connection to fashion and led to organizing fashion shows. Her work has been featured in over 25 exhibitions, including prestigious venues such as The Nehru Centre in London, Jehangir Art Gallery, and the Kala Ghoda Arts Festival. Shashi's home is a testament to her flair for design and eye for beauty, reflecting her creative spirit.

Shashi is married to Admiral Dinesh K Tripathi, Chief of the Naval Staff, and they have a son, Divyam, a lawyer, who is married to Tanya, also a practicing lawyer.

Contributions to Naval Welfare & Wellness:

Since joining the naval community, Mrs. Tripathi has been an active and empathetic member of NWWA, demonstrating a genuine commitment to improving the quality of life for naval families. Her compassion drives her deep involvement in social welfare issues, where she personally engages to alleviate challenges faced by the community.
At the helm of several impactful projects, she has been a guiding force behind:

- Sankalp: Mrs. Tripathi's dedicated involvement in Sankalp, the school for differently-abled children in Delhi, has been a source of inspiration.
- Art Studio Initiative: During her time in Visakhapatnam, she spearheaded the establishment of an art studio, which fostered artistic and literary expression within the naval community. As President NWWA (Ezhimala), she also curated an art appreciation workshop for the Naval cadets at the Indian Naval Academy.
- Tarsh: Her artistic vision contributed to the success of Tarsh, NWWA's block printing unit, both in Delhi and Visakhapatnam. Under her leadership, Tarsh expanded and generated increased profits. She envisions it evolving into a professional brand.
- Balwadi and Pet Clinical: In Mumbai, Mrs. Tripathi revived Balwadi, a school for the children of domestic workers in naval residential complexes, and was key in setting up a pet clinic.
- NAVI: As President NWWA, Mrs. Tripathi introduced NAVI, a line of products crafted from recycled materials by women of the naval community. This initiative supports women's empowerment, skill development, environmental awareness, and mental well-being.
- NWWA Talent Club: She established the NWWA Talent Club, a platform designed for the spouses of naval personnel, giving them the opportunity to nurture and showcase their talents in a supportive environment.

ADMIRAL DINESH K TRIPATHI

PVSM, AVSM, NM CHIEF OF THE NAVAL STAFF

Admiral Dinesh K Tripathi assumed command as the 26th Chief of Naval Staff on 30 Apr 24.Prior to this appointment, he was the Vice Chief of Naval Staff.

He is an alumnus of Sainik School Rewa and the prestigious National Defence Academy. He was commissioned into the Indian Navy on 01 Jul 1985 and specialised in Communication and Electronic Warfare. His command assignments include command of INS Vinash (Missile Vessel), INS Kirch (Missile Corvette), and INS Trishul (Guided Missile Frigate). Whilst in command of INS Kirch, he played a pivotal role during HADR operations after the Tsunami of Dec 2004, for which he received a letter of appreciation from the then President of Sri Lanka.

His other sea-going appointments include the Executive Officer of INS Mumbai (Guided Missile Destroyer), Fleet Electronic Warfare Officer, Fleet Communication Officer, as also the Fleet Operations Officer (akin to the Chief of Staff to the Fleet Commander) of the Western Fleet. His staff appointments include the Director of Naval Operations (DNO), Principal Director of Network Centric Operations (PDNCO), and Principal Director Naval Plans (PDNP).

After his promotion to the Flag Rank, he was appointed as Assistant Chief of Naval Staff (Policy and Plans), Flag Officer Commanding Eastern Fleet, Commandant of the prestigious Indian Naval Academy, Director General of Naval Operations, Chief of Personnel and the Flag Officer Commanding-in-Chief, Western Naval Command.

Such a diverse range of sea and staff appointments have enabled him to grasp the nuances of plans, operations, personnel and practically every aspect of the Indian Navy's functioning.

The Admiral is a graduate of Defence Service Staff College, Wellington, where he was awarded the Thimmaiya Medal for being the best all-round officer. The Admiral attended the Naval Higher Command Course and Naval Command College at the US Naval War College, Newport, Rhode Island, in 2007-08, where he won the Prestigious Robert E. Bateman International Prize.

The Admiral is a recipient of the Param Vishist Seva Medal, Ati Vishist Seva Medal and Nao SenaMedal for devotion to duty.

He is a keen sportsman and avidly follows tennis, badminton, and cricket. The Admiral is a student of International Relations, Military History, and the art and science of Leadership. He is married to Mrs Shashi Tripathi, an artist and homemaker. The couple have a son, Divyam, a practicing lawyer, who is married to Tanya, who works in the public health policy domain.

विन्ध्यांचल की आध्यात्मिक विभूति

परम तपस्वी संत बाबा कल्याणदास जी

भारतीय संत परंपरा न केवल देश, वरन पूरे विश्व की चिंतन धारा को मेरुदंड प्रदान किया है। सनातन प्रेमी भारतीयों के लिए यह गौरव का विषय है कि वैदिक प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक भारत की संत परंपरा अक्षुण्ण है। आज की युवा पीढ़ी, जिनका जीवन उथल-पुथल से भरा है उनमें भी इस देश की तपः संत महात्माओं की परंपरा विद्यमान है। **इस गौरवशाली परंपरा में उदासीन संप्रदाय के संत शिरोमणी के रूप में परम तपस्वी बाबा कल्याणदास जी का नाम अग्रणी है।**

पूज्य बाबाजी के व्यक्तित्व की विराटता का ओर-छोर नहीं है और उनकी गहराई अथाह है। उनके व्यक्तित्व में दिव्यता और भव्यता जटिल साधना से प्राप्त हुई है। बाबाजी की महानता को समझने का प्रयास हम महान संतों के श्रीमुख से उनके प्रति श्रद्धा भारित उद्‌गार और मधुर भावनाओं से कर सकते हैं।

उतरांचल के अल्मोड़ा जिले के एक छोटे से गाँव के एक पुण्यवान ब्राह्मण परिवार में बाबा जी का जन्म हुआ। उनके पिता के बड़े भाई ने उनको दत्तक पुत्र के रूप में गोद ले लिया था। बाबाजी ने नौ साल की बाल अवस्था में घर छोड़कर ईश्वर प्राप्ति का मार्ग चुना और वे घने जंगलों में प्रभु की आराधना में लग गये। ऋषिकेश में उनकी मुलाकात उनके गुरु परमहंस स्वरूप दास जी से हुई। जिन्होंने उन्हें उदासीन सम्प्रदाय एवं संन्यास की दीक्षा दी।

बाबाजी नेपाल, उड़ीसा और मध्य प्रदेश के अमरकंटक में कई वर्षों तक कठिन तपस्या में लीन रहें। उन्होंने माँ नर्मदा की परिक्रमा पूरी कर माँ की अनुमति से ही नर्मदा किनारे अपना आश्रम बनाया। माँ नर्मदा की यात्रा से बाबाजी को जिन कठिनाइयों का साक्षात्कार जनित अनुभव आश्रम के अस्तित्व में आने के बाद परिक्रमा वासियों को बड़ी सुविधा प्राप्त हुई। बाबा जी को अपने जीवन काल में कई बार देवी दर्शन की अनुभूति हुई। माँ नर्मदा उनको स्वप्न में प्रेरणा देतीं रहीं और बाबा जी का माँ नर्मदा से भावनात्मक लगाव बढ़ता गया।

बाबा जी अद्वैतवाद और सर्व धर्म संभाव के सशक्त समर्थक हैं। उनके उपदेश सरल और व्यावहारिक हैं, इस कारण बाबा जी की शिक्षाएं भारत के साथ-साथ विदेशों में भी बहुत प्रसिद्ध हो गयीं हैं। समाज के दीन-हीन के प्रति गहरी करुणा रखने वाले बाबा जी ने वन-वासियों और जन-जातियों के लिए धर्मार्थ औषधालय की स्थापना की। वे वनवासियों के बीच बहुत प्रिय हैं।

अमरकंटक में कल्याण सेवा आश्रम एवं डोल अल्मोड़ा में कल्याणिका हिमालय देवस्थानम् के साथ-साथ बाबा जी के प्रयासों के द्वारा दो आवसीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय पूरे देश से आये विद्यार्थियों को संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान कर रहें हैं। बाबा जी द्वारा स्थापित अस्पताल जरुरतमंदों और वंचितों की सच्ची सेवा कर रहा है। अध्यात्मिक साधना के साथ शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में किये गये कार्यों से भी बाबा जी ने अपने गुरु चरणानुरागियों पर असीम कृपा की है।

बाबा जी के श्री चरणों में आस्था रुपी पुष्प अर्पण कर उन्हें शत्-शत् प्रणाम।

विन्ध्यांचल की आध्यात्मिक विभूति

पूज्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

विन्ध्य धरोहर विश्वविख्यात पूज्य संत रामभद्राचार्य जी का जन्म 14 जनवरी 1950 को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में हुआ। दो माह की उम्र में ही स्वामी जी की ट्रेकोमा नाम की बीमारी से आँखों की रौशनी चली गई थी। स्वामीजी की प्रारंभिक शिक्षा उनके दादाजी के द्वारा हुई। 5 वर्ष की आयु में उन्होंने 10 दिनों के अन्दर केवल सुनकर 700 छन्दों की संपूर्ण वेदांत गीता कंठस्थ कर ली थी। 7 वर्ष की अल्पायु में सम्पूर्ण रामायण एवं आगामी कुछ वर्षों में ही 4 वेदों, 6 शास्त्र, 18 पुराण, उपनिषद, संस्कृत व्याकरण आदि ग्रंथों को सुनकर कंठस्थ कर लिया। औपचारिक शिक्षा के लिये जौनपुर जिले के निकट एक गाँव में संस्कृत, हिंदी, गणित, इतिहास आदि विषयों की शिक्षा उपरांत आदर्श गौरीशंकर संस्कृत महाविद्यालय में दाखिला लिया। केवल सुनकर याद रखने की क्षमता के कारण स्वामीजी लगातार अपनी कक्षा में सर्वश्रेष्ठ रहे।

1971 में वाराणसी के सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री एवं आचार्य की डिग्री एवं 1981 में 31 वर्ष की आयु में पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त की। आल इंडिया संस्कृत कांफरेस की प्रतियोगिता में स्वामीजी को 8 में से 5 गोल्ड मेडल प्राप्त हुए थे। 1987 में भगवान श्रीराम की तपोस्थली चित्रकूट में तुलसी पीठ की स्थापना की एवं यहीं से उनका नाम पं. गिरधर मिश्र के स्थान पर जगतगुरु स्वामी रामभद्राचार्य पड़ गया। वर्ष 2001 में दिव्यांग विश्वविद्यालय की स्थापना की, यह विश्वविद्यालय दुनिया का पहला दिव्यांग विश्वविद्यालय है। स्वामीजी इसके आजीवन कुलाधिपति है।

न्यायालय में रामजन्म भूमि के शास्त्रीय साक्ष्य – रामजन्मभूमि के मामले में स्वामीजी ने 441 साक्ष्य प्रस्तुत किये, जिसे न्यायालय द्वारा स्वीकार किया गया। स्वामीजी ने अथर्व वेद के दशम काण्ड के 81 वें अनुवाक्य के दूसरे वाक्य से भी प्रमाण उपलब्ध कराये थे।

वर्ष 1961 में स्वामीजी को अयोध्या के पंडित श्री ईश्वरदास महाराज से उपनयन संस्कार के समय गायत्री मंत्र के साथ राम मंत्र की दीक्षा प्राप्त हुई एवं नवम्बर 1983 के कार्तिक पूर्णिमा के दिन रामानंद संप्रदाय में विखत की दीक्षा ली।

संयुक्त राष्ट्र को संबोधन – वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित सहस्त्राब्दि विश्व शांति शिखर सम्मेलन में भाग लेकर 'भारत' और 'हिन्दू' शब्दों की व्याख्या के साथ ईश्वर के सगुण निर्गुण स्वरूपों के उल्लेखों के साथ वक्तव्य दिया।

स्वामी जी अब तक 230 से ज्यादा धार्मिक पुस्तके एवं 60 से ज्यादा साहित्य की रचना कर चुके हैं। उन्होंने हिंदू धर्म व विश्व शांति हेतु लगभग पूरे विश्व में धार्मिक प्रचार यात्राएँ की हैं। स्वामी जी को हिंदी साहित्य व्याकरण एवं हिंदी भाषा के गौरव की रक्षा के लिए सम्मानित किया गया। अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन भागलपुर, बिहार में महाकवि की उपाधि तथा 2006 में तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा साहित्य अकादमी पुरूस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। 2011 में पूज्य संत मुरारी बापू द्वारा तुलसी अवार्ड से सम्मानित किया गया। 2015 में उन्हें यश भारती का सम्मान दिया गया। उसी समय भारत का सर्वोच्च द्वितीय नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। स्वामी जी 22 भाषाएँ बोलते है। सैकड़ों राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित हो चुके है।

स्वामी जी के श्री चरणों में आस्था रुपी पुष्प अर्पण कर उन्हें शत्-शत् प्रणाम।

विन्ध्यिका प्रवाह

	विषय	रचनाकार	पृष्ठ
1.	कवितायें - 26 जनवरी, आजादी का अमृत महोत्सव	एयर कोमोडोर विनोद कुमार तिवारी	1-2
2.	सैनिक स्कूल रीवा का परिचय	संकलित	3
3.	गीत - हे भारत ध्वज शत-शत वंदन है	तामेश्वर शुक्ल तारक	4
4.	भरहुत स्तूप	डॉ. सुद्युम्न आचार्य	5-6
5.	कविताएँ- जिंदगी, फौजी की प्रियतमा	ब्रिगेडियर शिवपाल सिंह	7
6.	राम विन्ध्य के रोम-रोम में	जयराम शुक्ल	8-10
7.	कविताएँ- ज्यामिति की परिभाषाओं में..., मौसम पर दोहे...	गीतेन्द्र प्रताप सिंह	11-12
8.	राव रणबहादुर सिंह से स्वामी प्रशान्तानंद की अद्भुत यात्रा	चन्द्र मोहन गुप्त	13-15
9.	कविताएँ- छप्पर फाड़ के...., गुलाब, समय-समय की बात	शैलेन्द्र सिंह 'शैल'	16-17
10.	श्रद्धांजलिः आकाश भर सपना (कालिका प्रसाद त्रिपाठी)	सेवा राम	18-20
11.	श्रद्धांजलिः जिन्दगी के प्यास का सफर (डॉ. सुमेर सिंह)	सेवा राम	21-24
12.	कविताएँ- हम पाँखी उस गाँव के..., रौशनी से नहाया शहर	नरेन्द्र सिंह बघेल	25
13.	अपनी एक बिरादरी साहित्यकारों की भी	पद्मश्री बाबूलाल दाहिया	26
14.	भोले बाबा के लोकगीत	पद्मश्री बाबूलाल दाहिया	27-28
15.	कविताएँ- अब आबा कउन जमाना हो...,चला चली ध्वज वंदन का	रमेश प्रताप सिंह 'जाखी'	29
16.	रीवा राज्य के महाराजा गुलाब सिंह	अजय सिंह परिहार	30-35
17.	वद्धावस्था में सावधानियाँ	डॉ. अव्यक्त अग्रवाल	36
18.	Mobile Addiction in Children	डॉ. मानसी परिहार हर्षे	37-38
19.	क्षणिकायें	अन्नपूर्णा प्रसाद पाठक 'अपूर्ण'	39
20.	इतिहास के झरोखे से गढ़ कुण्डार	आर.बी. सिंह	40-42
21.	कविताएँ- इसमें कौन खिलौना है....	अनूप 'अशेष'	43-44
22.	बघेलखण्ड के प्रमुख स्थानों के नामकरण का इतिहास	डॉ. देवेन्द्र सिंह 'हिरा'	45-48
23.	गज़ल- दर्द भरी आँसू की भाषा....	कृष्ण गोपाल 'राही'	49-50
24.	वृतांत नाटक 'आनन्द रघुनन्दन'	रविरंजन सिंह परिहार	51-54
25.	बघेलखण्ड का आध्यात्मिक केन्द्र लक्ष्मणबाग रीवा	असद खान	55-56
26.	बघेली गीत एवं गज़ल	शिवपाल तिवारी	57
27.	लगी टेंव - बघेली कहानी	शिवपाल तिवारी	58-59
28.	खजुराहो का शिल्प	दिनेश प्रताप सिंह परिहार	60-61
29.	स्वैक्षिक क्वारंटीन में असली मास्साहब...	वरुणेन्द्र प्रताप सिंह	62-63
30.	कविताएँ- पीयुष वर्षा....	अवध प्रताप शरण	64-65
31.	बघेलखण्ड राज्य की समृद्ध साहित्य परम्परा एवं उनके वाहक	सुधीर सिंह परिहार	66-70
32.	लोक भोजन - बघेली व्यंजन	श्रीमती सरिता सिंह	71-73
33.	पर्यावरण हमारी नदियों की महत्ता एवं उनका संरक्षण	डॉ. यू.बी.एस. परिहार	74-76
34.	बर्थ-डे (कहानी)	नगेन्द्र सिंह परिहार	77-81
35.	बघेली गीत	दीपक तनहा	82
36.	गाँव की धूल के समर्थ सर्जक देवीशरण ग्रामीण - श्रद्धांजलि	अजीत प्रताप सिंह 'कुंवर'	83-88

स्मृति का वातायन-१

विंध्य भवन का शिलान्यास

श्री विन्ध्य सां. मंच के सौजन्य से पशु चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर

विंध्य भवन की प्रवेश पूजा

विन्ध्य भवन में आयोजन

विंध्य संस्कृति सम्मेलन एवं हृदय रोग जांच शिविर

विस्तृत सोच रख विकास का रास्ता अपनाएं

विंध्य संस्कृति भवन का शिलान्यास

300 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण

जरूरतमंद ग्रामीणों को मिले रोजगार : जस्टिस मिश्रा

विंध्य सांस्कृतिक मंच का वार्षिक सम्मेलन

विन्ध्य सांस्कृतिक मंच द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन में पुस्तक का विमोचन करते अतिथिगण।

सम्मान समारोह में उपस्थित दर्शक।

जन्म भूमि कभी नहीं बदलती

विंध्य सांस्कृतिक मंच के तत्वावधान में

रक्तदाताओं ने महायज्ञ में किया रक्तदान

श्री विन्ध्य सांस्कृतिक मंच, जबलपुर के सम्मानीय आजीवन सदस्य

श्री रविनन्दन सिंह जी
मोबा.- 9425151912

श्री जी.पी. सिंह
मोबा.- 9826251910

ब्रिगेडियर शिवपाल सिंह
मोबा.- 8518889669

श्री बी.एस.एस. परिहार
मोबा.- 9825152059

श्री एच.पी. पटेल
मोबा.- 9827433510

डॉ. प्रदीप कुमार सोलंकी
मोबा.- 9424678171

डॉ. एच.एन. मिश्रा
मोबा.- 9425800166

श्री ए.पी. शुक्ला
मोबा.- 9425192789

डॉ. के.पी. सिंह
मोबा.- 9425359365

श्री आर.एन. गुप्ता
मोबा.- 9300743494

श्री दिनकर प्रसाद शर्मा
मोबा.- 9425156657

श्री आर.बी. सिंह
मोबा.- 9826935379

डॉ. पुष्पराज सिंह बघेल
मोबा.- 9893145202

श्री गजेन्द्र सिंह बघेल
मोबा.- 9200150000

श्री सत्येन्द्र शुक्ला
(आई.पी.एस)
मोबा.- 9425176744

श्री ज्ञानेंद्र सिंह
मोबा.- 9425157131

श्री राजवर्धन श्रीवास्तव
मोबा.- 9425011379

न्यायमूर्ति
मान. श्री विजय शुक्ला

श्री व्ही.के.एस. बिसेन
मोबा.- 942512563

डॉ. आर.पी.एस. बघेल
मोबा.- 9425863305

श्री ए.पी. सिंह
मोबा.- 9826154053

श्री अजय पाल सिंह
मोबा.- 9229132987

श्री मृगेन्द्र सिंह
मोबा.- 9425155211

डॉ. पी.एस. बुंदेला
मोबा.- 9407001317

श्री आशा श्रीवास्तव
मोबा.- 9826279777

श्री आर.पी. सिंह
मोबा.- 9425359424

डॉ. मृदुला सिंह
मोबा.- 9425116100

श्री सी.के. जैन
मोबा.- 9300101380

श्री संजय सिंह
मोबा.- 9425412294

डॉ. मानसी परिहार (हर्षे)
मोबा.- 9479638740

श्री विन्ध्य सांस्कृतिक मंच, जबलपुर के सम्मानीय आजीवन सदस्य

श्री लाल बहादुर सिंह बघेल
मोबा.- 9425867053

श्रीमती शशि पांडे
मोबा.- 9425156901

श्री भूपेंद्र सिंह
मोबा.- 9425330780

श्री हितेन्द्र सिंह
मोबा.- 9669674296

श्रीमती वीना चौबे
मोबा.- 9826344472

श्री मृगेन्द्र सिंह परिहार
मोबा.- 9425413053

डॉ. संत प्रसाद गौतम
मोबा.- 9425154228

श्री के.बी. सिंह
मोबा.- 9425860218

श्री सत्येन्द्र सिंह परिहार
मोबा.- 8989770089

डॉ. जी.एस. कलचुरी
मोबा.- 9425151876

श्री जी.पी. सिंह
मोबा.- 9407338012

श्री एस.सी. खरे
मोबा.- 9584843337

श्री हरीश अग्निहोत्री
मोबा.- 9425160246

श्री मनीष ठाकुर
मोबा.- 9893122686

श्री नरेन्द्र शर्मा
मोबा.- 9425802829

श्री चंद्रमोहन गुप्ता
मोबा.- 9425177442

डॉ. अरविंद शुक्ला
मोबा.- 9826463370

श्री राहुल सिंह
मोबा.- 9425081277

श्री बी.एस. परिहार
मोबा.- 9826254488

श्री कौस्तुभ सिंह
मोबा.- 9424770166

श्री रोहित सोहगौरा
मोबा.- 9755304710

श्री डी.पी. सिंह परिहार
मोबा.- 9826185564

श्रीमती रंजना तिवारी
मोबा.- 9826377112

श्री राजललन सिंह
मोबा.- 9425330835

श्री अखिल सिंह
मोबा.- 9425124176

श्री नीतेश सिंह
मोबा.- 9039026199

डॉ. कमल राज सिंह बघेल
मोबा.- 9301927499

श्री वीरेन्द्र सिंह चन्देल
मोबा.- 9425327735

श्री प्रवीण दुबे
मोबा.- 9826193300

श्री प्रवीण सिंह
मोबा.- 9301819088

स्मृति का वातायन-२

मास्टर बद्री प्रसाद

न्यायाधिपति श्री रामपाल सिंह

श्री जगदीशचन्द्र जोशी

श्री लाल प्रद्युम्न सिंह

श्री यमुना प्रसाद शास्त्री

मान. न्यायाधिपति श्री अजीत सिंह जी का अभिनंदन

एस्कार्ट हास्पिटल दिल्ली के सौजन्य से नि:शुल्क हृदय रोग परीक्षण शिविर

स्मृति शेष उमेश शुक्ल
(लोक नृत्य की प्रस्तुति)

विन्ध्य क्षेत्र की कला–प्रकृति एवं पुरातत्व : चित्र वीथिका

सौजन्य से : डॉ. मुकेश येंगल
सहा. प्राध्यापक, कन्या महा.वि. रीवा, मो. 9630541115

सुपारी के श्री गणेश जी

रीवा में सुपारी से बनाये जाने वाले श्री गणेश जी की प्रतिमा। देश का एकमात्र जिला है जहाँ पान में खाये जाने वाली सुपारी से विभिन्न कलाकृतियाँ बनाई जाती है। जिनके लिये वर्ष1993 में कलाकार श्री राममिलन कुंदेर को राष्ट्रपति पुरूस्कार दिया गया।

चचाई जलप्रपात सिरमोर जिला रीवा – भूसंरचना के समय ही प्रकृति ने विंध्य के पठार को रीवा जिल में चचाई सहित 8 जलप्रपातों का उपहार दिया। महीयशी महादेवी वर्मा, प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू सहित देश की अनेक जानी मानी हस्तियाँ भ्रमण कर चुकी है।

चचाई के जलप्रपात

पुरवा जलप्रपात, जिला रीवा – सतना जिला से बहकर आने वाली टमस नदी से बनने वाला जलप्रपात है। जो अत्यंत दर्शनीय है। पूरवा जलप्रपात से 2 किमी पहले 1 तीर्थ स्थल बसामन मामा स्थल है जहाँ वर्षभर श्रद्धालु आते है।

रीवा नगर के मध्य अविरल प्रवाहित होने वाली **बीहर नदी** – मैहर के पहले से निकलकर अमरपाटन होती हुई बीहर नदी हजारों साल से रीवा नगर के मध्य से प्रवाहमान होती चली आ रही है। अब इसमें बाण सागर परियोजना बन जाने के उपरांत सोन नदी का पानी भी प्रवाहित होता है। जिससे सिरमौर के पास टोंस हाईडल प्रोजेक्ट के नाम से 315 मेगावॉट बिजली का उत्पादन होता है।

देउर कोठार में ईसा पूर्व के **बौद्ध स्तूप** – यह रीवा से इलाहाबाद जाने वाले मार्ग पर गढ़ कटरा के समीप देउर कोठार नामक गांव में स्थित है, जिनका समयकाल लगभग 300 ईसापूर्व का है।

ऐतिहासिक बैजू धर्मशाला – देश की आजादी के पूर्व रीवा राज्य के तत्कालीन महाराजा गुलाब सिंह जूदेव के समय में उन्होंने नगर सेठ बैजनाथ सहाय से मुसाफिरों के लिये धर्मशाला बनवायी थी। करीब 85 वर्ष पूर्व की निर्मित यह धर्मशाला अत्यंत दर्शनीय है।

विश्व विख्यात सफेद बाघ– सर्वप्रथम रीवा बघेल राजवंश के यशस्वी महाराजा मारतण्ड सिंह जूदेव ने शिकार के समय वर्ष 1951 में सफेद बाघ शावक को देखा जिसे पकड़वाकर गोविंदगढ़ के किले में रखा गया और प्यार से नाम दिया गया 'मोहन'। आज विश्वभर जितने भी सफेद बाघ चिड़ियाघरों में देखे जाते है, सभी बाघ मोहन के ही वंशज है।

रीवा फोर्ट में स्थित **प्राचीन पुतरिहा दरवाजा** – रीवा किले में स्थित है। जो लगभग 1000 वर्ष पूर्व निर्मित है।

31 सिमरिया के जंगल में **रॉक शेल्टर्स** – प्रगैतिहासिक काल के शैल चित्र उपलब्ध है।

माँ शारदा देवी का प्राचीन मंदिर – मैहर पूर्व जिला सतना म.प्र. शासन द्वारा मैहर को नया जिला बनाया गया है। किवदंती है कि माँ शारदा की स्थापना लगभग 1000 वर्ष पूर्व बुंदेलखण्ड के वीर रंणबाँकुरे आल्हा-उदल द्वारा स्थापना की गई थी। जो आज भी माँ शारदा की पूजा-पाठ एवं प्रथम दर्शन हेतु प्रतिदिन शारदा पीठ में आते है।

अमरकंटक का मनोरम दृश्य – अमरकंटक पूर्व जिला शहडोल वर्तमान जिला अनूपपुर मैकल पर्वत पर स्थित नर्मदा, सोन एवं जोहिला नामक तीन नदियों की उद्गम स्थली अनेक साधू संतो की तपस्या स्थली के रूप में भी प्रसिद्ध है।

रीवा जिले की तहसील गुढ़ की पहाड़ी पर लगभग **1000 वर्ष पुरानी भैरव बाबा की विशाल प्राचीन प्रतिमा** है। लगभग 1000 वर्ष पूर्व इस पूरे क्षेत्र में कल्चुरी शासको का सम्राज्य था। कल्चुरी शासक भगवान शिव के भक्त थे। उनके द्वारा भगवान शिव के अवतार भैरव बाबा की 31 फुट लंबी विशालकाय प्रस्तर प्रतिमा का निर्माण करवाया गया।

विन्ध्य क्षेत्र के आधुनिक तीर्थ

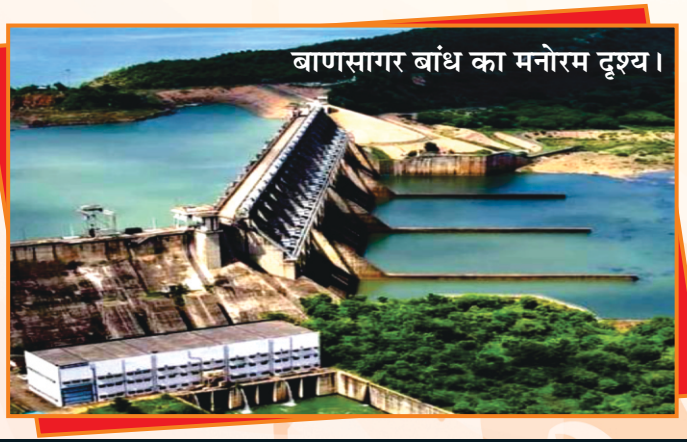
बाणसागर बांध का मनोरम दृश्य।

रीवा जिले में स्थापित 700 मेगावॉट का
एशिया के बड़े सौर ऊर्जा संयत्रों में शामिल
(मान. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लोकार्पित)

श्री विन्ध्य सांस्कृतिक मंच एवं विन्ध्य भवन की संकल्पना

माँ नर्मदा की पावन कृपा से विन्ध्य - महाकौशल अंचल में संस्कारधानी जबलपुर का आकर्षण जन समुदाय को कर्मभूमि/साधनाभूमि के लिये सदैव से प्रेरित करता रहा है। इसी आकर्षण के कारण विन्ध्य अंचल से एक बड़ा समुदाय जबलपुर में आजीविका, व्यवसाय एवं शिक्षा आदि के लिये आकर, यह हां रच-बस गया।

प्रत्येक अंचल की अपनी लोक परंपरा, भाषा-बोली, संस्कृति एवं संस्कार होते है। संस्कृति के समावेशीकरण में भी उनसे लगाव बना रहा है। इसी लगाव के कारण विन्ध्य अंचल की कला, साहित्य, संस्कृति एवं संस्कारों के पोषण के उद्देश्य से 'श्री विन्ध्य सांस्कृतिक मंच' की स्थापना की गई। प्रतिस्पर्धा के इस युग में आपसी संबंधों में आत्मीय स्पर्श बनाये रखने के संकल्प के साथ मंच ने धीरे-धीरे अपनी यात्रा जारी रखी। साधनों की सीमित उपलब्धता को ध्यान में रखकर स्वास्थ्य शिविर, रक्तदान शिविर, जागरूकता शिविर, जैसी गतिविधियाँ संचालित करता रहा है। साहित्यिक आयोजन एवं सम्मान समारोह की कड़ी में विन्ध्य अंचल की प्रतिभाओं के सम्मान समारोह तथा एक अनियतकालिक स्मारिका 'विन्ध्यिका' का प्रकाशन भी उल्लेखनीय गतिविधियों में हैं।

व्यक्ति हो अथवा संस्था, सभी को एक आधार की आवश्यकता होती है। मंच के सदस्यों की तीव्र अभिलाषा थी कि गतिविधियों में स्थायित्व एवं निरंतरता के लिए संस्था का स्वयं का भवन हो। सपना बड़ा था एवं संसाधन सीमित। संकल्प दृढ़ हो तो बड़े से बड़ा सपना पूरा हो सकता है। संस्था के संस्थापक एवं वर्तमान अध्यक्ष माननीय श्री रविनन्दन सिंह जी की प्रेरणा, धैर्य एवं साहस से प्रयास फलीभूत हुआ। संस्था को कटंगा कॉलोनी में दूरदर्शन टावर के पास एक भूखंड प्राप्त हुआ जो कि असमतल, पथरीला एवं पहाड़ी था। जिसे समतल किया जाकर अंततोगत्वा वह शुभ दिन आया जब दिनांक 22 दिसंबर 2007 को परम तपस्वी एवं समाजसेवी संत बाबा कल्याणदास जी के मांगलिक आशीष की छत्र-छाया एवं स्मृति शेष माननीय सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति श्री जे.एस. वर्मा के शुभ कामनाओं के साथ शिलान्यास सम्पन्न हुआ।

संसाधन हो तो बड़ा संकल्प शीघ्र पूरा हो जाता है, परन्तु हमारी संस्था के साधन सीमित थे एवं संकल्प बड़ा। सदस्यों /शुभचिन्तकों के संबल/ सहयोग /अनुदान के माध्यम से गति मिली और आज भवन एवं इसकी स्थिति छायाचित्रों में अवलोकन योग्य है। विन्ध्य भवन के भूखंड का आकार 10 हजार वर्गफुट तथा निर्माण लगभग 20 हजार वर्गफुट में है। भवन के भूतल में पार्किंग व अन्य विविध गतिविधियों के लिए खुला कक्ष, एक प्रेक्षागृह (ऑडीटोरियम), एक सभागार एवं एक अन्य बहुउद्देशीय वृहतकक्ष तथा अतिथियों के आवास के लिए 10 कक्ष, 2 ग्रीन रूम, तीन लाबी, एक कार्यालय कक्ष का समावेश भवन में है। भवन के सभी कक्ष एवं सभागार वातानुकूलित हैं। लिफ्ट भी लगी हुई है।

सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए संस्था को एक स्थायी आधार प्राप्त हो जाने पर आयोजनों के लिए मंच की बाहरी निर्भरता समाप्त हो गई। साथ ही अन्य समान सामाजिक संस्थाओं को भी भवन उपलब्ध रहता है।

मंच की भवन की संकल्पना कभी साकार नहीं, हो पाती यदि हमारे अध्यक्ष माननीय श्री रविनन्दन सिंह जी का भागीरथी प्रयास एवं सदस्यों, सहयोगियों, सुहृदो का सहयोग प्राप्त नहीं होता।

कृपया देखें कुछ छायाचित्र ''विन्ध्य भवन नये कलेवर में''...

बी.एस.एस. परिहार

सचिव, श्री विध्य सांस्कृतिक मंच